श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मूल गोदावरीके तीर्थपुरोहित श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर.जिला. नाशिक महाराष्ट्र
भ्रमणदुरध्वनी और व्हॉटअँप - 09422268596 भूषण सांभ शिखरे
भ्रमणदुरध्वनी और व्हॉटअँप - 08149471194 निनाद भूषण शिखरे

417,ग्रहसंकेत,सत्यनारायण मंदिरके नजदीक,मेनरोड,कुशावर्त कुंड एरीया,मु.पो.श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर जिला.नाशिक-राज्य-महाराष्ट्र-422212

दुरध्वनी - (02594)233014 - (फोन करनेका समय दोपहर सिर्फ 2 से 5 तथा रात्री 8 से 10 तकही।)
---
www.kalsarpyog.com & www.pitrudoshpuja.com & bhushanshikhare@gmail.com

---

pitrudodh & kalsarpyog इस दोनो नामसे गुगल प्ले स्टोअरपर इस नामसे आपके सामने हाजीर है।

नमस्कार।मै भूषण सांभ शिखरे मूल गोदावरी श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर(नाशिक महाराष्ट्र)तीर्थस्थान का स्थानिक तीर्थपुरोहित हुँ।

हमारे संघटन का नाम त्र्यंबकेश्वर पुरोहित संघ।हमारे संघटनका रजिस्टर नंबर है F-352 ।हमारे सभी संघटनके सदस्योंका नाम पुरा रेकॉर्ड जिलाधिकारी नाशिक तथा पुलिस कमीशनर नाशिकके पास दर्ज है।

मेरा अधिकारपत्र का नंबर है दस(10)।इसलिए हम श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वरके अधिकृत तीर्थपुरोहित होनेका दावा करते है। हम यहाँके सभी प्रकारके धार्मिक विधी(जैसे की,पितृदोष (नारायणबली नागबली तथा त्रिपिंडी श्राद्ध) तथा कालसर्प पुजा त्र्यंबकेश्वर मंदिरमे होनेवाले सभी प्रकारके (रूद्राभिषेक,लघुरुद्र आदी सभी पुजा) पुजाविधी अन्य सभी प्रकारके स्थानिक तीर्थविधी स्वयंही करवाते है।मुझे किसीभी बैसाखी की जरूरत नही है।कुछ लोग कभी बोलते है की,पहले तो सभी लोग ऐसेही कहते है।मगर कहते है कुछ और करते है कुछ कहनेका मतलब

मै आपको यहाँपर होनेवाले यथायोग्य धार्मिक पुजाविधीके बारे तथा यहाँपर आनेवाले श्रध्दालुकों धार्मिक विधीके नामपर जो गोरखधंदा करनेवाले कुछ स्वार्थी या पाखंडी लोगोसे कैसे बचे इस इसबारेंमे कुछ बताना चाहता हुँ।ताकी आपको भी तथा आपके परिचय लोगोंको भी तो पता चले की,यहाके कौने लोग सही है या गलत इसबारेंमे तथा सही बातोंके बारेमें पता चले,यही मुल भावना मेरी है।(सारांश कहे तो जागो ग्राहक जागो।)

यदी आप श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वरमे किसीभी गुरूजीके पास अगर धार्मिक विधी हेतु आते हो या लोगोंको भेजतो हो तो उनकी पहचान कैसे आप कर सकतो हो,इसके कुछ नमुना जानकारी भेज रहा हुँ।इसबारेंमे जाँचपडताल करकेही आप सहीमे उनकेपास भेज सकतो हो।मेरेपास भेजो ना भेजो यह मेरा आग्रह आपसे बिलकुल नही है।

(अगर अपनी इच्छा हो तो आप मेरा नाम-पता किसी जरूरत मंदको जरूर दे सकते हो।एकबार अनुभव देखनेमे क्या हर्ज है।क्योकी यह धार्मिक विधी करवाना यह मेरा धंदा बिलकुल नही है।बल्की यह मेरा परंपरागत व्यवसाय है।)

यह भेजनेका मुख्य कारण यह है की,ऐसे स्वार्थी पाखंडी लोगोंके कारण हमारे तीर्थस्थानका नाम बदनाम हो रहा है। इसीलिए यह मै सुचनापत्र आपको भेज रहा हुँ।इसमेरी बातोंपर भरोसा करो या ना करो यह आपकी मर्जी है।मगर जो लिखा है या आगे जो भी लिख रहा है,यह 100% सत्य है।

1)यहाके स्थानिक हर तीर्थपुरोहित गुरुजीके पास अधिकारपत्र दिया है,उसकी जाँचपडताल सर्वप्रथम करे तथा उस अधिकारपत्र दिखवाने की सर्वप्रथम जरूर माँग करे।

2)वह गुरुजी सभी प्रकार की धार्मिक विधी प्रारंभ से आखीर तक स्वयं करते है क्या।(ऐसा बहोतबार भी देखा गया है की,कुछ गुरुजी पहले दिनकी पुजा एक गुरुजी करवाते है,दुसरे दिनकी पुजा दुसरा गुरुजी करवाते है और आखरी दिनकी पुजा तिसरा गुरुजी करवाता है।)सारांश मे कहे तो ऐसे गुरुजी धार्मिक विधी नही धंदा करते है,कुछ लोग इस व्यवसाय को इंस्डस्टीजज् भी कहते है।लोगोंको पुजाका लाभ मिले ना मिले इसकी चिंता वह लोग बिलकुल भी करते नही।इसलिए ऐसे पाखंडी मतलबी लोगोंसे सावधान रहे।लोग सिर्फ पैसा कमानेका जरीया बनाके रखा है,ऐसे मतलबी लोगोसे जरूर जरूर सावधान रहे।

ज्यादातर त्र्यंबकेश्वरके बारेमे एक गलत वहम फैलाया जा रहा है की,आपकी पुजाविधी अलग कराएगें।चलो पुजाविधी अलगसे करवाई मगर पुजाविधी पुरे तरीकेसे करवाई क्या,इसकी जाँचपडताल ना करते हुए भरोसा करनेवाले बहोत सारे लोग त्र्यंबकेश्वरमे आते है।
मगर जीतना फरक असली घी तथा डालडा घी मे फरक है उतना ही फरक यहाँके कुछ गुरुजींमे फरक है।
त्र्यंबकेश्वरमे नारायणबली नागबली जहाँपर होता है,उसका इतिहास यह है,

1)वह जगह अहिल्यानदी तथा गोदावरी इनके बराबर संगमपर है।
2)हिंदु धर्ममे पहले सती जानेकी प्रथा थी।वह सतीका स्थान उसी संगमपर ही है।
3)अश्वत्थ(पिपल)नारायणके पेडके पास यह संगम है।
4)यह संगम भगवान त्र्यंबकेश्वर के मंदिरके नजदीक है।

3)जो जो धार्मिक विधी तय किये हुए जगाहपर करते है क्या।नारायणबली-नागबली यह पुजाविधी अहिल्या-गोदावरीके संगमपर ही करवाते है।तथा त्रिपिंडी श्राद्ध कुशावर्त कुंडके आजुबाजुके परिसरमे ही करवाते है। नारायणबली नागबली की आखरी दिनकी पुजाविधी तथा कालसर्प की पुजाविधी गुरुजीके घर करवाई जाती है।

ऐसा कभी कभी देखा गया है की,कुछ स्वार्थी लोग कालसर्प की पुजाके नामपर त्र्यंबकेश्वर मंदिरमें या किसीभी अन्य शिवालयमें चांदीके या तांबेके नाग मुर्तीके उपर अभिषेकपुजा करके कालसर्प पुजा संपन्न हुई है,ऐसा कहकर पैसे ठगनेकी कोशिश करते है। ऐसे स्वार्थी लोगोंसे जरूर जरूर बचके रहे।

(कौनसी पुजाविधी कैसे की जाती है व किस तरीकेसे करवाते है इसबारेंमे आगे विस्तार पूर्वकसे आगे बताने वालाही हुँ।)

श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वरमे सभी प्रकारके शुभाशुभ धार्मिक विधी किये जाते है।मगर ज्यादातर लोग खास करके जीस पुजाके आते है वह पुजा है,यहा आगे विस्तारपूर्वक जो जानकारी दे रहा हुँ उसे कृपया शांत दिमागसे पढकर तथा सकारात्मक दृष्टीकोन रखकर आगेका सही फैसला करे,ताकी सहीमें हमने जो पैसे खर्च किये है उसी पैसेका पुरा का पुरा फल हमे प्राप्त हो सके।मेरी स्वयंकी सोच यही कहती है की,अगर डॉक्टर या वकील निष्णात चुनते हो तो धार्मिक विधीमें गुरुजी भी निष्णात क्यो नही चुनते।

(यह मेरा अनुभव है की,पुजाविधीमें लोग सर्वप्रथम दक्षिणा कितने लोगे ऐसा पुछते है मगर डॉक्टर या वकीलके पास पुरा उलटा ही होता है।वहाँपर पैसे नही गुणवत्ताको सर्वप्रथम महत्त्व दिया है।दुकानोंमें डालडा या वनस्पती घी भी मिलता. है तथा गायका असली घी भी मिलता है।वनस्पती घी जरूर सस्ता होता है और असली घी जरूर महंगा ही होता है,तो आप खाने हेतु कौनसा घी खरेदारी करते हो।)

भूतकालसे ही पहलेसे ही धार्मिक विधी सही था वर्तमानमे भी सही है और भविष्यमे भी सहीही रहेगा। मगर जबतक हमारी सही सोचनेकी सोच नही बदलेगी तबतक चोरोंकी दुकान कभीभी बंद नही हो सकती। उस दुकानको बंद करनेकी क्षमता हमारे इच्छाशक्ती होनीही चाहिए तो परिस्थिती एकही झटकेमें बदल सकती है।

इसलिए मै रोजही बारबार कहता हुँ की,सर्वप्रथम अपनी नकारात्मक सोचको बदलो तो नकारात्मक परिस्थिती जरूर जरूर बदलेगी।बस परिस्थिती बदलने की क्षमता हमारे अंदर होना जरूरी है।

1)श्री त्र्यंबकेश्वर महादेवजी का अभिषेक महा-पुजा व महा-मृत्युंजय जाप आदी पुजा।फिलहाल अंदर जानेका समय सिर्फ सुबहके (6 से 7) बजेतक ही।शायद आगे जाकर भविष्यमे गर्भगृहका दर्शन बंद होनेकी आशंका है।हमारे यहाँपर गर्भगृहमे सिर्फ और सिर्फ पुरुष ही जाते है।

(बस महाराष्ट्रके संपूर्ण श्रावण मासमे और महाशिवरात्रीके दिन प्रात:कालके पाच बजे से सात बजेतक वह गर्भगृह प्रवेश सशुल्क ही।)

कुछ लोगोंकी अभीभी यही गलत सोच है की,त्र्यंबकेश्वर देवस्थान के व्दारा प्रत्यक्ष भाविकोंकी कोईभी धार्मिक विधी नही की जाती या उनके कोई विशेष गुरुजी है या रखे है।अगर कोई ऐसा कहते है,तो वह व्यक्ती आपको ठग रहा है या ऐसी ठगने की जरूर कोशिश कर रहा,ऐसा जरूर समझे।त्र्यंबकेश्वर मंदिरमे सभी के सभी धार्मिक विधी त्र्यंबकेश्वर पुरोहित संघके मतलब हमारे संघटणके अधिकृत गुरूजी व्दाराही किये जाते है।

2)तीन दिवसीय पितृदोष(नारायणबली-नागबली व त्रिपिंडी श्राद्ध)की पुजा। इस तीन दिवसीय पुजा कैसे होती है यह जानकारी इस तरहसे है।जो मै बता रहा यह मुल नियमसे है।आपके गुरूजी इस तरहसे पुजाविधी आरंभ करते है क्या इसकी जाँचपडताल करे।उपरांत ही उसी गुरुजीपर भरोसा करे।

पहले दिनकी शुरुवात होती तीर्थराज कुशावर्त कुंडसे ही होती है।कुशावर्त कुंडपर जाकर प्रथम पाच सुपारी एक नारीयल तथा पंचरत्नके लिए पाच रूपीये लेकर गंगापुजन होगा।उपरांत जिनके पिता जीवीत नहै,उनके सभी मृत पूर्वजोंके संकल्प करके तथा उनके नामसे मुंडन या क्षौर कर्म होता है।उपरांत देहशुध्दी तथा शरीर शुध्दीकरण प्रायश्चित्त संकल्प करके स्वच्छ स्नान करके कोरे वस्त्र परिधान किये जाते है।

(यहाँपर हर पुजाके लिए प्रती एक-एक नये कोरे वस्त्र लाने होते है और पुजा संपन्न होनेके पश्चात यह वस्त्र यहाँपर छोड देने होते है।पुरूषोंके लिए फुलसाईजवाली धोती,बनियन,अंडरपँट,टाँवेल, नँपकिन और स्त्रियोंके लिए रंगीन साडी,ब्लाऊज,पेटिकोट तथा बाकीके अंर्तवस्त्र।)

पितृदोषकी पुजा नारायणबली से शुरुवात करते है,उसकी शुरुवात संगमपर जाकर पहले दिनकी पुजाकी शुरुवात होती है।वहाँपर मुख्य संकल्प करके पुजाका आरंभ किया जाताहै।सर्व प्रथम सुर्य,दीप, भूमी,वरूण देवता पुजन करके पंचकलश की स्थापना करके छे भगवान की(महाविष्णु,ब्रम्हाजी, विष्णुजी,शिवजी,यमजी,तत्पुरूष)स्थापनादी

षोडशोपचार पुजनादी कर्म करके महाविष्णुका स्मरण करते हुए विष्णु तर्पण करके स्थापीत देवताके अंगभूत प्रायश्चित हवन करके एकादश विष्णु श्राद्ध तथा पंचदेवता श्राद्ध करके स्थापित देवता को बलीप्रदान करके।

(जीनको संतात नही या उस संतान प्राप्तीमे दिक्कत आ रही है,ऐसे लोगोंसे अश्वत्थ नारायण की पुजा करके वंशपात्र का पुजन करवाया जाता है।)

मुख्य विधी मतलब पालाशविधीसे या पर्णशरविधीसे जो त्र्यंबकेश्वर क्षेत्र यहाँकी विशेष कही जाती है,उसीसे शुरुवात होती है।उसमे एक दिनके बच्चेके आकार जैसा पालाशपर नारीयल तथा आटेसे तैय्यार की गयी मुर्ती का पुजन करके उस मुर्तीको मृत घोषित करके अंतीमयात्रा निकालकर अग्निसंस्कार आदी विधी करके दशांत विधि करके पहले दिनका विधी संपन्न होती है।मतलब नारायणबली का पूर्वार्ध खत्म।

(उस समय यहाँपर पुजाविधीमे बैठनेवालोंको एक दिनका नारायणका सुतक होता है।सुतक होनेके दौरान हमारे व्दारा सुतकके कुछ नियम बताए जाते है।जैसे की,सुतकके दौरान किसीभी मंदिरमे प्रवेश तथा गावकी हद छोडना तथा सभी प्रकारके नशा करना तथा नकारात्मक सोचना सदासर्वदा वर्जित है।उस नियमोंका पालन करना जरूरी तथा अनिवार्य होता है।विधीके उपरांत स्नान करके तीर्थोपवासके कारण एक समयका भोजन करके आराम।)

दुसरे दिन सुबह कुशावर्त कुंडपर स्नान आदी कर्म करके त्र्यंबकेश्वर मंदिरमे जाकर दर्शनादी कार्य करके त्र्यंबकेश्वर मंदिरकी ग्याराह परिक्रमा करके दुसरे दिनके पुजाविधी की शुरुवात होती है।दुसरे दिनकी पुजा मतलब उत्तरार्ध से शुरुवात होती है।पुजाका आरंभ महिकोदिष्ट श्राद्धसे होती है।यहाँपर एक पलाशके पत्तेपर चटश्राध्द करके भोजनादी कर्म करके महिकोदिष्ट श्राद्धका पिंड लेकर उपरांत मासिकश्राध्द करके पश्चात इस श्राद्धकी समाप्ती होती है।

इस महिकोदिष्ट श्राद्धके पश्चात तुरुंत सपिंडीकरण श्राद्धसे शुरुवात होती है।यह श्राद्ध तीन चटोपर किया जाता है। पहला चट भगवानका,दुसरा चट नारायणरूपी प्रेतका,तिसरा चट उसी नारायणके पितृके(पिता,दादा,परदादा मतलब ब्रम्हा विष्णु रूद्र) नामसे आवाहनादी कर्म करके तथा भोजनादी कर्म करके चार पिंडका श्राद्ध होता है।उसमे का पहला पिंड लंबाकार होता है।वह पिंड नारायण नामक प्रेतके नामसे दिया जाता है।बाकीके तीन गोलाकार पिंड पिता,दादा,परदादा के नामसे देकर संज्जोजन करके प्रेत योनीसे मुक्त करके पितृ अवस्थामे भेजनेका कर्म खत्म होकर पाथेय श्राद्धसे आगे का पितृकर्म शुरुवात होती है।आगे नारायणबलीका कर्म खत्म होकर नागबली कर्म की शुरुवात होती है।यहाँपर पिष्टमय नागप्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार पुजा करके बलीप्रदान करके नागप्रतिमा का दहन करके आठ पिंड का बलिदान करके दुसरे दिनका कर्म खत्म होता है।उपरांत स्नान करके भोजनादी कर्म करके पश्चात विश्राम।

(यहाँपर पुजामें बैठनेवालोंको दुसरे दिन नागका सुतक होता है।सुतक होनेके दौरान हमारे व्दारा सुतक के कुछ नियम बताए जाते है।जैसे की,सुतकके दौरान किसीभी मंदिरमे प्रवेश तथा गावकी हद छोडना तथा सभी प्रकारके नशा करना तथा नकारात्मक सोचना सदासर्वदा वर्जित है।उस नियमोंका पालन करना जरूरी तथा अनिवार्य होता है।)

तिसरे दिनका आरंभ होता त्रिपिंडी श्राद्धसे।त्रिपिंडी श्राद्ध कुशावर्त कुंडके परिसरमेही होता है।कुशावर्त परिसरके अलावा अन्य जगाहपर बिलकुल भी नही होता है।

(जो लोग त्रिपिंडी श्राद्ध त्र्यंबकेश्वरमे करवा रहे है ऐसे श्रध्दालुकों बिनती है की,त्र्यंबकेश्वरमे कुछ पाखंडी या लालची मतलबी लोग त्रिपिंडी श्राद्ध कुशावर्त कुंडके अलावा किसी महत्त्वहीन या मतलबी गैर-जगाहपर करवाते देखे गये है।,कुशावर्त कुंडके परिसरमे त्रिपिंडी श्राद्ध करवाने सर्वप्रथम माँग करे।धर्मशास्त्रीय नियमोंसे सही जगह वही है।ऐसे स्वार्थी मतलबी लोगोंसे त्र्यंबकेश्वरमे सावधान रहे।)

त्रिपिंडी श्राद्धका मतलब इसमे तीन पिंडका श्राद्ध होता है।(पहला पिंड होता है संपूर्ण चावलका दुसरा पिंड होता है संपूर्ण जवका और तिसरा पिंड होता है संपूर्ण काले तिलका)इसमें संकल्पसे आरंभ करके तीन कलश स्थापन करके चार भगवानकी(महाविष्णु, ब्रह्म विष्णु महेश) स्थापना करके उपरांत तीन चटश्राध्दसे शुरुवात करके चटपुजानादी विष्णुतर्पणदी तथा भोजनादी कर्म करके तीन पिंड दिये जाते है।पहला पिंड बाल्यावस्थाके लिए दिया जाता है।(बाल्यावस्था यह गर्भवस्थाके 8 वे महिनेसे शुरुवात होकर 16 की उम्रतक कही गयी है।)दुसरा पिंड युवावस्थाके लिए दिया जाता है (युवावस्था यह 16 की उम्रसे लेकर 40 सालकी उम्रतक कही गयी है।)और आखरी पिंड वृद्धावस्थाके दिये जाता है।(40 उम्रके पश्चात वृध्दावस्था कही गयी है।)उपरांत पुजनादी कर्म करके त्रिपिंडी श्राद्धकी समाप्ती हो जाती है।

श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर मे जो होनेवाले सभी धार्मिक पुजाविधी की सही तथा सटीक
जानकारी जानने हेतु www.kalsarpyog.com & www.pitrudoshpuja.com इस मेरी बेबसाईटपर जाकर सही मुल जानकारी प्राप्त कर सकते है।वहाँपर अधिकसे अधिक सही जानकरी देनेकी कोशिश मैने जरूर कीहै।)

पितृदोषकी(नारायणबली-नागबली तथा त्रिपिंडी श्राद्ध) पुजाके लिए जो कोरे वस्त्र पहनकर बैठे थे वह वस्त्र छोडकर अपने घरसे लाये हुए रोजके ही वस्त्र पहनकर रोजके वस्त्र पहनकर गुरुजीके घर गणेशपुजन पुण्याहवाचन कर्म करके गुरूजीके पत्नीव्दारा मांगल्य आरती करके सुवर्णनागप्रतिमा पुजन करके संपूर्ण पितृदोष की समाप्त हो जाती है।

ऐसे तिनदिवसीय पितृदोष पुजाकी त्र्यंबकेश्वरके परंपरागत रीतीसे होती है।अगर किसीके इस पितृदोष पुजाविधी के पश्चात काशी गया प्रयागराज जैसे तीर्थश्राध्द करके इच्छा हो तो भी करवा सकते हो।

पितृदोषकी संपूर्ण पुजाविधी संपन्न होनेके पश्चात अगर किसीभी श्रध्दालुकों त्र्यंबकेश्वर भगवानजी को अभिषेकपुजन जरूर करवा सकते है।

(गोदावरीके तीरपर खास करके किया जानेवाला तीर्थश्राध्द जरूर करवा सकते है।ऐसा ही श्राद्ध काशी क्षेत्रमें तथा गया क्षेत्रमें और प्रयागराज क्षेत्रमें आदी तीर्थक्षेत्रपर करवाया जाता है वैसा ही तीर्थश्राध्द त्र्यंबकेश्वर क्षेत्रमें करवाने का शास्त्रीय महत्त्व है।त्र्यंबकेश्वरमें तीर्थश्राध्द करवाने के पूर्व इसके लिए उन्हे पहलेही पूर्वसुचीत करना अनिवार्य है। इस दोनो धार्मिक विधी करवाने लिए उन श्रध्दालुकों एक दिन ज्यादा रहना जरूरी है।)

(श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर इस क्षेत्रका शास्त्रीय व धार्मिक पौराणिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व क्या है, इसबारेंमे आगे विस्तारपूर्वक दिया है।)

।। श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर की ऐतिहासिक तथा पौराणिक महत्त्व ।।

त्र्यंबकेश्वर यह एक बारा ज्योतीर्लिंगमे से एक महत्वपूर्ण ज्योतिर्लिंग है।यहाँपर वृद्ध गौतमी गंगा अर्थात गोदावरी का उद्‌गमस्थान है।यह गोदावरी सत्ययुगमे पृथ्वीपर प्रगट हुई है।गोदावरी का जन्मदिन पौष शुद्ध दशमीके है।गोदावरी तथा गौतम ऋषी और त्र्यंबकेश्वर महादेवजी का क्या महत्त्व है यह शिवमहापुराणके अंर्तगत आ रहे चतुर्थ कोटीरूद्रसंहितामे बाराह ज्योतीर्लिंग माहात्म्यके अंदर त्र्यंबकेश्वर क्षेत्रका महत्त्व विस्तारसे लिखा है।यह चार कुंभमेलामे का एक पूर्ण कुंभमेलाका महत्त्वपूर्ण स्थान भी है।

।। मूलस्थानं समायान्तु सिंहस्थेच बृहस्पती । ।। वर्षमेकं च तिष्ठंतु पुनर्यान्तु निजाश्रमम् ।। (पद्मपुराण)

हर बारा बरसके पश्चात आनेवाला यह सिंहस्थ महाकुंभ पर्वकालमे,कुशावर्त तीर्थमें स्नान व दान करना,शास्त्रशुद्ध एवं परंपरागत प्रसिद्ध है।यह पर्वकालमें सभी तीर्थ,सभी नदीयाँ और देव-देवता उसका मालिन्य गमाने के लिए भगवान त्र्यंबकराजके आज्ञासे कुशावर्तमे वास करते है। और पर्वकालके पश्चात अपने-अपने स्थानपर को चले जाते है।(श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर का महाकुंभमेला 13 महिनोंका होता है।)

।। कुशावर्त समं तीर्थ नास्ती ब्रह्मांड गोलके । ।। तस्मात्परतरंतीर्थ न भूतोन भविष्यति ।।
।। चतुष्कोणं भवेतीर्थं षट्कोणस्तीर्थं राजम ।। ।। कुशेना वर्तीता गंगा गौतमेन महात्मना ।।

अर्थात कुशावर्तके सरीका पुण्यपावन तीर्थ भूमीपर कहीभी नही है।सतयुगमें गौतम ऋषीके हाथो गोहत्या पाप दुर करने हेतु जगत्पावनी वृद्ध गंगाका (गोदावरी) कुशावर्तमे रोक लिया।इस लिए इसी तीर्थको तीर्थराज कुशावर्त कहते है।

।। सर्व तीर्थ मयी गोदा सर्व देव मय: शिव: । ।। उभयात्मक मेतध्दि कुशावर्त मतोधिकम् ।।

अर्थात सभी तीर्थोकी आत्मा गोदावरी और सर्व देव स्वरूप भगवान त्र्यंबकराज ये दोनो भी एकरूप होकर त्र्यंबकेश्वरमे वास करते है।

।। राम राम महाबाहो मद्‌वाक्यं कुरू यत्नत: ।। ।। सिंहस्थिसुरगुरौ दुर्लभं गौतमी जलं ।।
।। यत्र कुत्रापि राजेंद्र कुशावर्ते विशेषतः ।। ।। तव भाग्येन निकटे वर्तते ब्रम्हभूधर: ।।
।। सिंहस्थे तु समायाते राम: कश्यप संयुत: ।। ।। त्र्यंबक क्षेत्रमागत्य तीर्थयात्रा चकार ह ।।
(स्कंदपुराण)

अर्थात मर्यादा पुरूषोत्तम प्रभु श्री रामचंद्रजी चौदा सालोकै वनवासमे नाशिकमे जब रहे थे।तभी उनको पता चला की,उनके पिता महाराज दशरथजी का स्वर्गवास हुआ।मगर वनवासी होनेके कारण वह लौटकर जाना मुककिन नही था। तभी वह कश्यप ऋषीके पास जाकर अपनी समस्या बताई।महर्षी कश्यपजीने उन्हे बताया की,भाग्यसे आप फिलहाल नाशिक मे हो।तो श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वरमे जाकर अपने पुत्रधर्म का पालन करने हेतु तुम वहाँपर जाकर श्राद्ध कर्म करवा लेना।वह अपने पिता सहित अपने पूर्वजोंके उध्दारके लिए कारण श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वरमे तीर्थक्षेत्रपर आकर महर्षी कश्यप ऋषीके आज्ञासे तथा उनकी आचार्यत्वमे सिंहस्थके अवसरपर तीर्थश्राध्द विधी करवाया।

।। कुशावर्ते तु ये राज वपनं च यथा विधी ।। ।। कुर्वति तेषां पितर: शिवरूपा भवन्तिते ।।

अर्थात कुशावर्त तीर्थपर मुंडन तथा तीर्थविधी करनेवालोंके पितृगण शिवरूप हो जाते है।

।। रेवातीरे तप: कुर्यान्मरणं जान्हवी तटे ।। ।। दानं दद्यात् कुरक्षेत्रे तत्त्रयं गौतमी तटे ।।

अर्थात नमर्दाजी के तटपर तप करना तथा भगीरथ तटपर मृत्यु आना तथा कुरक्षेत्रपर दान करना ऐसी महिमा है।यह तीने कर्म गोदावरी कुशावर्त तीर्थपर करना यह विशेष पुण्यप्रद है।

।। त्र्यंबके चाब्जके चैव गोदासागरे संगमे ।। ।। सर्व सुलभा गोदा त्रिषु स्थानेषु दुर्लभा ।।(पद्मपुराण)

अर्थात त्र्यंबकेश्वर यह गोदावरी नदीका मुलस्थान है अब्जक मतलब नाभी स्थान यह नांदेड (महाराष्ट्र) है तथा अंत्यस्थान गोदावरी सागर संगम राजमहेंद्री (आंध्रप्रदेश) यह तीन स्थानोपर गोदावरी के स्नान दुर्लभ होता है।

।। गौतमस्य गां जीवनं ददाती इति गोदा ।।

गौतम ऋषीको गौ को जीवदान दिलाके गौतम ऋषीको गौ हत्याके पातकोसे दुर और मुक्त किया।इसलिए इस वृद्ध गंगाजी को दुसरा नाम है गौतमी गंगा।आगे चलकर इसी गौतमी गंगाजी को गोदावरी नाम प्रचलित हुआ है।वही गोदावरी नाम वर्तमानमे गोदावरी नामसे प्रचलित है।

।। माहेश्वर जटास्था या आपो दैव्यो महामते ।। ।। तासांतु व्दिविधो भेद: आहर्तु: पदकारणात् ।।

अर्थात गोदावरी और भागीरथी यह दोनोभी महानदीयाँ धुर्जटीके (महादेवजी) जटाओंसे इस पृथ्वीपर प्रगट हुई है। उसमेसे एक महानदी गोदावरी यह गौतम ऋषीके व्दारा सत्ययुगमे श्री क्षेत्र त्र्यंबकेश्वरमे ब्रम्हगिरी पर्वतपर प्रगट हुई तथा दुसरी महानदी गंगाजी के नामसे त्रेतायुगमे भागीरथ राजाने गंगोत्रीसे प्रगट हुई।

।। ब्रम्हद्रवरूपा गोदावरी धर्मद्रवरूपा भागीरथी ।। ।। ब्रम्हवर्चसाचा अल्हादक चंद्र गौतम ।।

अर्थात ब्रम्हतपका शांत व संथ शितल प्रवाह है भगीरथने तप किया और जान्हवीका प्रवास पृथ्वीपर आया।इसलिए गौतम ऋषी का सत्ययुगमे गोदावरी तथा भागीरथ राजाके व्दारा त्रेतायुगमे भागीरथी जन्मी है।त्र्यंबकेश्वर यह तीर्थक्षेत्र है।पांडवोंका धर्मक्षेत्र है।कौरवोंका कुरक्षेत्र है।यहाँपर सदीयोंसे पापपुण्य का युद्ध चला आ रहा है।हारे हुए पाप इसी भूमीपर शरणागती लेते है।यही मोक्ष का मार्ग मिलता है।संतो की पुण्योंसे ये भूमी पावन है।पापोंका अंत करनेवाली त्र्यंबक यह भूमी पुण्यभूमी भी है तथा धर्मभूमी भी है और तपोभूमी भी है।

गंगा ब्रम्हद्रव तथा धर्मद्रव है।यहाका गोदावरी का जल तीर्थरूप है।गंगा ब्रम्हदेवके कमंडलुका आद्य जल है।गंगा की पवित्र जलसे ब्रम्हदेवने आवमन किया,वही जल भगवान शंकरजी की जटाओंसे प्रगट हुआ तथा वही जलधारा आगे जाकर विष्णुजी के चरणतीर्थ बन गयी।यही गंगा जब धरतीपर आयी तो कई गुणोंसे संपन्न हो चुकी थी।भगवान शंकरजीकी जटाओंसे निकलकर इस गंगाने जब वसुंधरा को आलिंगन दिया तब उसका जल पवित्र हो गया।जलसे पाप धुल सकता था।यह गंगा संत तुकारामजी के अभंग स्थापन्न हुई तब इंद्रायणीने गंगासे घबराकर अभंग वापस कर दिये।संत ज्ञानेश्वर की समाधी भी गंगा किनारे ही हुई थी।ज्ञानगंगा की बहन यही गंगा है।

।। तीर्थ ब्राहम मळ क्षाळे ।। ।। सत्कर्मे अभ्यंतर उजळे ।। ।। गंगा संतो को पसंत है ।।

ज्योतिर्लिंग भगवान शंकरजीकी जटाओंसे निकली हुई जलधारा गंगा है।सूर्य, चंद,तथा अग्नीने अपना पापदाहक ज्ञानप्रकाश गंगाजीको प्रदान किया है।

शब्दरचना

भूषण सांभ शिखरे (पवईकर)